रांगेय राघव के कथासाहित्य में यौन -संबंधों की अभिव्यक्ति

प्रा. जे.ए.पाटील. क्रांतिअग्रणी जी.डी. बापू लाड महाविद्यालय, कुंडल तहसिल- पलुस, जिला - सांगली (महाराष्ट्र)
ईमेल- jagannathapatil@gmail.com मोबा–9960765862

.....

भूमिका-

मानव समाज की प्रगति एवं विकास के लिए स्वतंत्र मानवीय संबंधो की जितनी आवश्यकता है उसमें कही अधिक महत्वपूर्ण है स्त्री-पुरूषों के समभावपूर्ण, सहवास के धरातल पर मुक्त और आदर्श संबंध। मानवीय स्तर पर स्त्री-पुरूष अधिक महत्त्वपूर्ण इसलिए है कि सृष्टि और आदर्श समाज के निर्माण में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान स्वीकार किया गया है। आज यौन संबंधों की यथार्थ स्थिति के संबंध में कहा जा सकता है कि स्त्री-पुरूष के आस्थाहीन, कृत्रिम संबंध ही सर्वत्र देखे जाते हैं जिसमें परस्पर स्नेह, सोहार्द और विश्वास के स्थान पर वासना, संदेह और अविश्वास के प्रभाव से दिशाहीन जीवन के दर्शन होते है।

हमेशा से ही देखा गया है कि पुरूषवर्ग नारी के शरीर का भूखा रहा है। पति या पर पुरूष की वासना के शिकारसे नारी छटपटाती रही है। उसका यौवन,निराश्रय आर्थिक विवशता एवं सौदर्य उसे वासना के कर्दम की ओर ले जाते हैं। स्त्री-पुरूष के वासनामय अवैध संबंधों में कभी-कभी नारी की भी उद्दाम वासना जिम्मेदार होती है। नव परंपरा एवं अतृप्ति की पीडा उसे वासनामय बना देती है। रांगेय राघव ने अपनी कहानियों में पुरूष की वासना,कामुकता एवं लंपटता के साथ नारी की वासनामयता के चित्रों को भी उभारा है।समाज में अधिकार यह देखने को मिलता है कि उच्चवर्ग का पुरूष जहाँ धनलोलुप होता है वही कामुक भी । इनमें स्नेह ,संवेदना तथा आत्मीयता के झरने सूखे मिलते है और मिलते ही भोग, विलास, दानवीयता के रेतीले प्रदेश । इस वर्ग की नारी पुरूषों को आकृष्ठ करनें, सुख प्राप्त करने तथा भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए उच्छृखल हो जाती है। जैसे 'देवदासी' कहानी की सुर्यमणि निम्नवर्ग का पुरूष और नारी दोनों ही अर्थाभाव में अतृप्त कामनाओं व वासनाओं को तृप्त करनें में प्रयत्नशील दिखाई देते है। रांगेय राघव की कुछ कहानियों में वैध यौन संबंधों और अधिकांश में अवैध यौन संबंधों की अभिव्यंजना हुई है। अवैध संबंधों में स्त्री - पुरूषों की परवशता, विवशता, अतृप्ति की पीडा, कुंठा के साथ उनके छलकपट, वासना और कामुकता को उभारने का प्रयास उन्होंने किया है।

(१) नैतिक धरातल पर यौनसंबंधों का चित्रण :-

यौन संबंधों के अंतर्गत नैतिक संबंधों में पति - पत्नी संबंध और निस्वार्थ भावना से बने स्त्री - पुरूष संबंध आते है। रांगेय राघव की कहानियों में नैतिक संबंधों का चित्रण पति- पत्नी संबंधों में ही देखा जा सकता है। उनकी अधिकतर कहानियों में अर्थविषमता, वर्गविषमता, घूटन, पीडा और विवशता से उत्पन्न अनैतिक संबंधों का ही चित्रण अधिकांश में मिलता है। इनमें उच्चवर्गीय लोगों और पदाधिकारियों व्दारा विवश नारी के जबर्दस्ती संबंध स्थापित करना या जीने के लिए दो पैसे पाने की इच्छा से नारी का पुरूष से जानबुझकर मासंल संबंध स्थापित करना जैसे विविध रूप है। रांगेय राघव के ' चिडी के गुलाम', 'आकर्षण', 'घासपूस', आवाज घुटने लगी', धर्म - संकट', 'जाति और पैशा', ' घिसिटता कंबल', आदि कहानियों में क्रमशः प्रताप और उसकी पत्नी, सुखदास और चंपा, सुबोध और सरस्वती, गुरूदयाल सिंह और पत्नी आदि के रूप में पति - पत्नी के यौन संबंधों को चित्रित किया हैं वे नैतिक धरातल, पर दिखाए गएं हैं। 'देवदासी' और 'अनुवर्तिनी' जैसी कहानियों में रूक्मिणी और रंगभद्र नंदिनी और आनंद भिक्षु के आपसी संबंध मित्रता के धरातल पर दिखाएँ गऐ है। जिन्हें अधिकतर नैतिक संबंध ही कहा जा सकता है।

(२) अनैतिक यौन संबंधों का चित्रण :-

स्त्री - पुरूषों के अनैतिक कामुक, वासनामय संबंधों का चित्रण 'देवदासी' 'अनुवर्णिनी', 'तिरिया', बॉबी और मुंतर', 'उँट की करवट' , 'पंचपरमेश्वर', 'काई',
'नरक', 'साँझ के शिकारी', आदि कहानियों में मिलता है।

'देवदासी' कहानी में धनंजय कामुक पुरूष है जिसका प्रेम बासनामय हैं इसीलिए वह राजमाता सुर्यमणि को छोडकर देवदासी रूक्मिणी के यौवन को देखकर वासना में अंधा हो उसपर टूट पडता है।

'अनुवार्तिनी' कहानी में बौध्द भिक्षुसंघ स्तविर जैसे स्वयं को धर्म के रक्षक माननेवाले भी मौका पाते ही किस तरह कामुक हो उठते है इसका चित्रण करते हुए रांगेय राघव ने एक कटु सत्य को उभारा है -" आज का बुध्द भिक्षु हो या कोई और इससे बच नहीं पाता, कहीं न कहीं यह ज्वाला भडक उठती है।"[१]उन्होंने इस कहानी में यह दिखाया है कि " संघस्तविर अनुवर्तिनी के मांसल शरीर को देखकर व्याकुल हो जाता है तथा उसके नजदीक जाकर उससे संबंध स्थापित करने के अनेक प्रयास भी करता है।"[२] 'नारी का विक्षोभ' कहानी में कामुकता और आकर्षण की शिकार युवा पीढ़ी को दिखाने का प्रयास किया गया है। " इसी सतई कामुकता के कारण ही विद्यार्थिनी सविता और मास्टर के अनैतिक संबंध बनते दिखाई देते है।"[३] इसीतरह अनैतिक यौन संबंधों पर रांगेय राघवजी ने अपनी कहानियों में चित्रण किया है।

(३) विवषता के कारण उत्पन्न अनैतिक संबंधों का चित्रण :-

जीवन में अतृप्ति के कारण या अधिकार पाने की लालसा से या जीने की चाह ये भी -कभी - कभी अनैतिक संबंध स्थापित हो जाते हैं। जैसे 'पंचपरमेश्वर' कहानी की फूलों सुख - सुविधा के लिए पति 'चंदा को छोडकर कन्हाई को अपना लेती है' क्योंकि चंदा के साथ रहते हुएं वह देखती है - '' जमाने की औरतों के तन पर बस्तर, गहने है, यहाँ खाने के लाले हैं।''[४] पुरूष प्रकृति से ही वासनामय होता है और हॉथ में धन, अधिकार या पद आने से वह और अधिक कामुक, लंपट तथा वासना का कीडा बन जाता है। जैसे '' 'नरक' कहानी का धनी हरदयाल मालिक है जो जवान, मांसल मजदूरिनों की तरफ कामुक व वासनामयी दृष्टि से देखता है। इतना ही नहीं वह गरीब मजदूर स्त्री पर लपक जाता है।''[५]गरीब औरतें पैसा कमाने के लिए उसके साथ सौदा करती है।

निष्कर्ष :-

उपरी उदाहरणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यौन संबंधों में शरीरी जीवन की माँग वासनामय संबंधों की जननी बन जाती है। जिस में उच्छृखलता के साथ - साथ नीतिहीन, आदर्शहीन शरीरी जीवन का ही रूप उभरता है और उनकी जिंदगी वासना, लंपटता, यौवन और वासना के नशे में डूबे हुएं स्त्री - पुरूषों के लिए मानवीय संबंधों और आदर्शो का कोई महत्त्व पूर्ण स्थान नहीं होता और अंत में वे कुंठाओं के शिकार हो जाते है। रांगेय राघव ने यौन संबंधों में जहॉ उच्चवर्ग के पुरूषों और अधिकारप्राप्त पुरूषों का अपनी वासनातृप्ति के लिए अवसर पाते ही विवश एवं दुर्बल नारी के जबर्दस्ती संबंध स्थापित करने की वास्तविकता को चित्रित किया है। वही नैतिक संबंधो में पति पत्नी के संबंधों की वास्तविक स्थिति को दिखाते हुएइस कटु सत्य को उभारा है कि समय के साथ आकर्षण और उत्माद के नष्ठ हो जाने से उनके संबंध तनाव, संशय और अभिमान पर बनते - बिघडते रहते है। यौन संबंधों में सह स्थिति सपाटता को संकेतित करती है क्योंकि इनके संबंध पति और पत्नी, दास और दासी, अभिमान और ऐठन। अच्छी भाषा में देवता और पूजारिन का रूप लेते है। रांगेय राघव प्रगति के साथ यह स्वीकार करते है कि स्वस्थ यौन संबंधों के लिए हमारी पुरानी पंरपराओं और मान्यताओं एवं मर्यादाओं से मुक्ति एक आवश्यक माँग है।

संदर्भ सूत्र :-

१) रांगेय राघव-अनुवर्तिनी (ऐय्याश मुर्दे) पृ -६६
२) रांगेय राघव-अनुवर्तिनी (ऐय्याश मुर्दे) पृ -६६, ७२
३) रांगेय राघव-नारी का विक्षेभ (ऐय्याश मुर्दे) पृ -१४८, १४६
४) रांगेय राघव-पंच परमेश्वर (मेरी प्रिय कहानियाँ) पृ -३६
५) रांगेय राघव- नरक (ऐय्याश मुर्दे) पृ -२३६